IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, June 2026
Impact Factor: 8.2

जैन तीर्थांकर नेमिनाथ : एक अध्ययन

डॉ. प्रदीप सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग

टी. डी. पी. जी. कालेज, जौनपुर (उ0प्र0)

जैन धर्म के इतिहास में प्रमुख तीर्थंकरों में नेमिनाथ का नाम जाजल्यमान स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित है। जिसने साधना के क्षेत्र में नया आयाम स्थापित किया है। नेमिनाथ (अरिष्टनेमि) अवसर्पिणी के बाइसवे जिन माने जाते है। द्वारावती के हरिवंशी महाराज समुद्र विजय एवं शिवादेवी के पुत्र थे। गर्भकाल में इनके पिता सभी प्रकार के अरिष्ठों से सुरक्षित थे तथा इनकी माता ने अरिष्टचक्र, नेमि का दर्शन किया था जिसके कारण इनका नामकरण अरिष्टनेमि या नेमि रखा गया। वसुदेव के पत्नीद्वय रोहिणी एवं देवकी से क्रमशः बलराम तथा कृष्ण का जन्म हुआ जो इनके चचेरे भाई थे। इस सम्बन्ध को व्यक्त करने के लिए मथुरा, देवगढ़, कुम्भारिया, विमलवसही एवं लूणवसही के नेमि के साथ कृष्ण एवं बलराम अंकन किया गया है। चौवन दिनों की निरंतर तपस्या के उपरान्त उज्जयंतगिरि स्थित बेतस वृक्ष के नीचे नेमि को कैवल्य प्राप्त हुआ। समवसरण में नेमि ने प्रथम ऐतिहासिक धर्मोपदेश दिया था। उज्जयंतगिरि भी नेमि की निर्वाणस्थली थी।[1] नेमि का लांछन शंख है।[2] कृष्ण के मुख्य लक्षण गदा (कुमुद्वती), खड्ग (नन्दक), चक्र, अंकुश, शंख एवं पद्म है। कृष्ण किरीट मुकुट एवं एवं कौस्तुभमणि से सज्जित है।[3] माला एवं मुकुट से सुशोभित बलराम का मुख्य लक्षण गदा, हल, मूसल तथा धनुष एवं बाण है।[4]

चौथी सदी ई० के मध्य मथुरा से पांच मूर्तियां प्राप्त हुई है, जो वर्तमान समय में राज्य संग्रहालय लखनऊ में स्थित हैं, जिसमें चार मूर्तियों में नेमि की पहचान पार्श्ववर्ती बलराम एवं कृण की आकृतियों पर आधारित है। बलराम की आकृति पाँच अथवा सप्त सर्पफणों के छत्र के रूप में की गयी है। एक कायोत्सर्ग मूर्ति में अरिष्टनेमि का नाम उत्कीर्ण किया गया है। डॉ० वी0एस0 अग्रवाल ने परवर्ती कुषाण काल की एक मूर्ति का उल्लेख किया है।[5] यह मूर्ति मथुरा संग्रहालय में संरक्षित है जिसका निचला भाग खण्डित है। नेमि के दाहिने और बाएं पार्श्व में बलराम एवं कृष्ण की चतुर्भुज मूर्तियां उत्कीर्ण की गयी है। बलराम की दो अवशिष्ट भुजाओं हल एवं गदा तथा कृष्ण की अवशिष्ट भुजाओं में गदा और चक्र उत्कीर्ण है। प्रथम शताब्दी ई० की एक ध्यानस्थ मूर्ति जो राज्य संग्रहालय लखनऊ में संरक्षित है। जिसमें चतुर्भुज बलराम की उपरी भुजाओं में गदा एवं हल उत्कीर्ण है। वक्षस्थल के समक्ष दाहिनी भुजा में एक पात्र प्रदर्शित किया गया है। चतुर्भुज भगवान श्रीकृष्ण वनमाला से सुभोभित हैं उनके अवशिष्ट तीन भुजाओं में एक अभयमुद्रा, गदा एवं चक्र का अंकन किया गया एक है।[6] द्वितीय और तृतीय शताब्दी ई० की ध्यानस्थ्य मूर्ति में केवल बलराम की मूर्ति उत्कीर्ण की गयी है[7] यह मूर्ति सप्त सर्पफणों से युक्त छत्र से निर्मित है। जिसमें द्विमुखीय बलराम नमस्कार मुद्रा की मूर्ति मथुरा से प्राप्त हुई है जिसमें जो कुषाण कालीन है, हल सहित अंकित हैं।[8] चतुर्थ शताब्दी ई० की एक मूर्ति (लखनऊ राज्य संग्रहालय) से प्राप्त हुयी है जिसमें नेमि कायोत्सर्ग में खड़े हैं, उनके पार्श्व भाग में चतुर्भुजी बलराम एवं श्रीकृष्ण की मूर्तियों का अंकन हैं, नेमि वामपार्श्व में एक छोटी जिन आकृति एवं चरणों के समीप तीन उपासकों का चित्रांकन किया गया है, सिंहासन के धर्मचक्र के दोनों तरफ दो ध्यानस्थ जिन मूर्तियों का चित्रांकन किया गया है, पाँच सर्पफणों से युक्त छत्रावली में बलराम की तीन भुजाओं में मूसल, चषक और हल तथा कृष्ण की तीन अवशिष्ट भुजाओं में

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, June 2026 Impact Factor: 8.2

चक्र, गदा और शंख निर्मित है। चतुर्थ शताब्दी की एक मूर्ति राजगिरी के वैमार पहाड़ी से प्राप्त हुई है। जिसके पीठिका पर महाराजाधिराज श्रीचन्द्र उत्कीर्ण है। आर०पी० चन्द्रा ने इसकी पहचान गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय से की है।[9] सिंहासन के मध्य में स्थिति एक पुरुष की आकृति अभयमुद्रा में उत्कीर्ण है। जिसकी पहचान आयुष पुरुष से की गयी है।[10] सम्भवतः राजपुरूष के रूप में यह नेमि का अंकन है।[11] आकृति के दोनों ओर शंख लांछन उत्कीर्ण है। राजघाट वाराणसी से सातवीं सदी की एक मूर्ति प्राप्त हुई है जो वर्तमान समय में भारत कला भवन, वाराणसी में संरक्षित है।[12] इस मूर्ति में सिंहासन पर नेमि ध्यान मुद्रा में आसीन है। यह मूर्ति दो भागों में विभक्त है। उर्ध्व भाग में मूलनायक की मूर्ति चामरधर, सिंहासन, भागमण्डल, त्रिछत्र, दुन्दुभिवादक और उदीयमान मालाधर एवं निम्न भाग में एक वृक्ष (कल्प वृक्ष) का चित्राकन किया गया है। वृक्ष के दोनों तरफ त्रिभंग मुद्रा में खड़ी द्विभुज यक्ष–यक्षिणी की मूर्तियाँ निरूपित की गयी है। दक्षिणी पार्श्व में यक्ष के दक्षिणी पार्श्व में यक्ष के हाथ में पुष्प[13] और घट तथा वाम पार्श्व में यक्षिणी के दाहिने हस्त में पुष्प और बायें भाग में बालक का चित्रांकन किया गया है। अम्बिका का द्वितीय पुत्र दक्षिण पार्श्व में स्थित है। गुजरात और राजस्थान से नेमिनाथ की मूर्ति प्राप्त होती है। दसवीं शदी ई० की एक ध्यानस्थ मूर्ति कटरा (भरतपुर) से प्राप्त हुई है जो भरतपुर राज्य संग्रहालय में संरक्षित है।[14] इस मूर्ति में यद्यपि शंख लांछन का अंकन मिलता है। परन्तु यक्ष–यक्षिणी का चित्रांकन नहीं है। 1179 ई० की एक ध्यानस्थ मूर्ति कुम्भारिया के पार्श्वनाथ में है जिसमें नेमिनाथ का नाम उत्कीर्ण है। बारहवीं शताब्दी की एक मूर्ति अमरसर (राजस्थान) से प्राप्त हुई है जो शंख लांछन से युक्त है। यह वर्तमान समय में गंगा गोल्डेन जुबली संग्रहालय, बीकानेर में संरक्षित है।[15] लूणवसही के गर्भगृह में एक ध्यानस्थ मूर्ति में शंख लांछन सर्वानुभूति एवं अम्बिका का निरूपण किया गया है। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश से प्राप्त मूर्तियों में अष्ट–प्रातिहार्यों, शंख लांछन एवं सर्वानुभूति तथा अम्बिका का नियमित अंकन प्रदर्शित है।[16] राज्य संग्रहालय लखनऊ में दसवीं से बारहवी शताब्दी के मध्य आठ मूर्तियां मिली हैं जिनमें शंख लांछन, चामर–घर, सिंहासन, त्रिछत्र एवं भामण्डल का अंकन उत्कीर्ण किया गया है। पांच उदाहरण में यक्ष–यक्षी एवं अम्बिका का निरूपण दर्शनीय है। पांच उदाहरण में नेमि कार्योत्सर्ग में खड़े प्रदर्शित किये गये हैं। एक उदाहरण के अतिरिक्त सभी में नेमि का निर्वस्त्रीय अंकन है। दो उदाहरणों में बलराम और कृष्ण की मूर्तियों का चित्रांकन है। दशवी शती की एक ध्यानस्थ मूर्ति बटेश्वर आगरा से प्राप्त हुयी है जिसकी पीठिका पर चार जिनों और सर्वानुभूति एवं अम्बिका की मूर्तियां उत्कीर्ण है। चामरधरों के निकट द्विभुजीय बलराम एवं कृष्ण की मूर्तियां उत्कीर्ण है। बलराम के दाहिने हाथ में चषक है परन्तु बायें हाथ का आयुध अस्पष्ट है। कृष्ण की दक्षिण भुजा में शंख और बायी भुजा जानु पर स्थित है। मूलनायक के स्कंधो पर जटायें प्रदर्शित की गयी है। ग्यारहवी शताब्दी की एक श्वेताम्बर मूर्ति प्राप्त हुई है जिसमें नेमि को कायोत्सर्ग में खड़े रूप में प्रदर्शित किया गया है। परिकर में तीन जिनों तथा बलराम और कृष्ण की मूर्तियों का अंकन है। इस मूर्ति में तीन सर्पफणों से युक्त छत्र और बनमाला से सुशोभित बलराम की मूर्ति का अंकन किया गया है। उनके तीन अवशिष्ट हाथों में दो में मूसल और हल तथा तीसरी जानु पर स्थित है। बनमाला और किरीट मुकुट से सुशोभित कृष्ण की मूर्ति भुजाओं में अभयमुद्रा, शंख, चक्र और गदा का निरूपण किया गया है। दसवीं ग्यारहवी शताब्दी की दो मूर्तियां पुरातन संग्रहालय मथुरा में संरक्षित है। दसवीं शती की मथरा से प्राप्त एकमूर्ति में नेमिनाथ यद्यपि ध्यान मुद्रा में स्थिति हैं परन्तु इसमें लांछन और यक्ष–यक्षी का अंकन नहीं हुआ है। पार्श्व में चतुर्भुजी बलराम बनमाला से सुशोभित त्रिभंग मुद्रा में खड़े है। तीन हाथों में चषक, हल और मूसल तथा चौथा हाथ जानु पर स्थित है। बनमाला से सुशोभित कृष्ण संमभंग मुद्रा में खड़े है, उनके दो हाथों में गदा और वरद मुद्रा तथा तीसरा जानु पर स्थित है। द्वितीय मूर्ति में लांछन का उत्कीर्ण तो हुआ है परन्तु यक्ष–यक्षी का अंकन नहीं है। मूलनायक के कंधो पर जटाएं सुशोभित है। ग्यारहवीं शती ई० की एक खड्गासन मूर्ति मैहर (म०प्र०) से प्राप्त हुई है। जिसमें

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, June 2026 Impact Factor: 8.2

सिंहासन छोरों के स्थान पर यक्ष–यक्षी मूलनायक के बाम पार्श्व में अंकित किया गया है। परिकर में एक चतुर्भुजी देवी का निरूपण किया गया है। जिनके हाथों में एक हाथ अभयमुद्रा में दूसरा में पद्म और तीसरा कलश का अंकन है। 1177 ई0 की एक ध्यानस्थ मूर्ति प्राप्त हुई है जिसमें यक्ष सर्वानुभूति है परन्तु यक्षी अम्बिका का चित्रण नहीं है। लांछन का भी उत्कीर्णन नहीं हुआ है।[17] डॉ० एम०एन०पी० तिवारी ने इसकी पहचान नेमि से की है।[18] परिकर में चार छोटी जिन मूर्तियों का अंकन किया गया है। सहेठ–महेठ (गोडा) से प्राप्त दूसरी मूर्ति में लांछन और यक्षी अम्बिका का अंकन हुआ है। 1151 ई० में प्राप्त एक मूर्ति में नेमिनाथ के कंधों पर जटा में प्रदर्शित की गयी है। दसवीं और बारहवीं शताब्दी के मध्य देवगढ़ में 30 से अधिक मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। अधिकांश मूर्तियों में नेमि अष्ट–प्रातिहार्यों, शंख, लांछन तथा पारम्परिक यक्ष–यक्षी का अंकन किया गया है। सत्रह उदाहरणों में नेमि कायोत्सर्ग में निर्वस्त्र रूप में खड़े रूप में निरूपित हैं। दस उदाहरणों में शंख लांछन का उत्कीर्णन नहीं हुआ है। सर्वानुभूति एवं अम्बिका की मूर्तियों के आधार पर इसकी पहचान नेमिनाथ से करना सम्भव है।"[19] तीन उदाहरणों में यक्ष–यक्षी का निरूपण नहीं किया गया है। परम्परा विरूद्ध कुछ उदाहरणों में यक्ष को नेमि के बायी और यक्षी को दाहिनी ओर प्रदर्शित किया गया है।[20] दसवीं शती ई० की मंदिर 2 की मूर्ति में बलराम और कृष्ण का भूर्तन किया गया है।[21] पांच सर्पफणों से युक्त द्विभुजीय बलराम के हाथ में फल तथा हल का निरूपण हुआ है। किरीट मुकुट से सुसज्जित चतुर्भुजी कृष्ण की तीन भुजाओं में शंख, चक्र और गदा का अंकन किया गया है। उन्नीस उदाहरणों में नेमिनाथ के साथ अम्बिका का निरूपण किया गया है। दसवीं शती ई० की मंदिर 16 में शंख लांछन से युक्त एक खड्गासन मूर्ति प्राप्त हुई है जिसमें यक्ष–यक्षी और चक्रेश्वरी का अंकन किया गया है। नेमि की केश रचना जटाओं के रूप में की गयी है। मूर्तिकार ने यहां पर नेमि के साथ ऋषभ मूर्तियों की विशेषताओं का प्रदर्शन किया है। मूर्ति के परिकर में 24 छोटी जिन मूर्तियों का अंकन किया गया है। सात उदाहरणों में नेमि के साथ यक्ष–यक्षी का निरूपण किया गया है।[22] कई उदाहरणों में मूल नायक के कंधों पर जटाएँ प्रदर्शित की गयी है।[23] मंदिर 15 की मूर्ति के परिकर में सात, मंदिर 26 की मूर्ति में चार, मंदिर 12 की चहारदिवारी की मूर्तियों में क्रमशः चार और छह, मंदिर 21की मूर्ति में दो, 11 की मूर्ति में दस, मंदिर 20 की मूर्ति में चार तथा मंदिर 31 के मूर्ति में दो छोटी लघु मूर्तियां उत्कीर्ण की गयी है। मंदिर 12 के प्रदक्षिणापथ की ग्यारहवीं शती ई० की कायोत्सर्ग मूर्ति के परिकर में द्विभुजी नवग्रहों की मूर्तियां निर्मित है। दसवीं शती ई० में दो मूर्तियां ग्यारसपुर के माला देवी मंदिर में प्राप्त हुई हैं।[24] नेमि के लांछन का यद्यपि इन मूर्तियों में अभाव है परन्तु यक्ष–यक्षी सर्वानभूति एवं अम्बिका का अंकन किया गया है एक मूर्ति के परिकर में चार और दूसरे में 52 छोटी जिन मूर्तियों का अंकन मिलता है। ग्यारहवीं शती ई० की ग्यारसपुर के बजरामठ से नेमि की एक कायोत्सर्ग मूर्ति प्राप्त हुई है। जिसमें लांछन का अभाव है परन्तु यक्ष–यक्षी सर्वानुभूति एवं अम्बिका का अंकन किया गया है।[25] बारहवीं शताब्दी ई० की मूर्तियां खजुराहों में प्राप्त हुई हैं। जिसमें नेमिनाथ ध्यानमुद्रा में अवस्थित है। ग्यारहवीं शती ई० की मंदिर 10 की मूर्ति में यद्यपि लांछन स्पष्ट नहीं है परन्तु यक्षी अम्बिका का अंकन स्पष्ट है। पीठिका पर नवग्रहों की सात मूर्तियों का अंकन किया गया है। स्थानीय संग्रहालय की दूसरी मूर्ति में शंख लांछन तथा सर्वानुभूति एवं अम्बिका का निरूपण है। परिकर में 23 छोटी जिन मूर्तियां निर्मित है। ग्यारहवी ई० की गुर्गी (रीवा) की एक कार्यात्सर्ग मूर्ति इलाहाबाद संग्रहालय में संरक्षित है।[26] इस मूर्ति में नेमि के साथ शंख लांछन और यक्ष–यक्षी का अंकन किया गया है। साथ में चामरधारिणी सेविकाओ का भी अंकन दर्शनीय है। चार छोटी जिन मूर्तियों का चित्रांकन किया गया हैं धुबेला संग्रहालय मध्य प्रदेश से एक मूर्ति प्राप्त हुई है जिसमें ध्यानावस्थित मुद्रा में नेमि विराजमान हैं। परिकर में 22 जिन मूर्तियां उत्कीर्ण की गयी हैं। 1142 ई0 की घुबेला संग्रहालय म0प्र0 से एक दूसरी मूर्ति प्राप्त हुयी है[27] जिसमें नेमिनाथ का नाम उत्कीर्ण है।[28] हार्निमन संग्रहालय से 1151 ई0 की एक मूर्ति प्राप्त हुई है जिसमें नेमि का शंख लांछन पीठिका के साथ वक्ष स्थल

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, June 2026 Impact Factor: 8.2

पर भी उत्कीर्ण है।[29] बिहार, उड़ीसा और बंगाल से ग्यारहवीं एवं बारहवीं शती की चार मूर्तियां प्राप्त हुई है। इस क्षेत्र में शंख लांछन का चित्रांकन नियमित रूप से मिलता है परन्तु यक्ष–यक्षी का निरूपण नहीं किया गया है। उड़ीसा में बारमुखी एवं नवमुनि गुफाओं की दो मूर्तियों में मात्र अम्बिका चित्रांकन मिलता है। 11वीं शती ई० की अलुआर से एक मूर्ति प्राप्त हुई है जो पटना संग्रहालय में संरक्षित है।[30] नवमुनि, बारभुजी एवं त्रिशूल गुफाओं में नेमि की तीन ध्यानस्थ मूर्तियां प्राप्त हुई है।[31] नेमिनाथ के प्रमुख जीवन दृश्यों का अंकन कुमारिया के शान्तिनाथ, 11वीं शती के महावीर मंदिरों, 12वीं शती के विमलवसही एवं 13वीं शती के लूणवसही में मिलता है। कल्पसूत्र के चित्रों में भी नेमिनाथ के जीवन दृश्यों का अंकन मिलता है। इसमें पंच कल्याणकों के अतिरिक्त नेमि के विवाह एवं कृष्ण की आयुधशाला में नेमि के शौर्य प्रदर्शन का दृश्य विस्तार से अंकित क्रिया गया है। कुम्भाटिका के शान्तिनाथ मंदिर तथा लूणय सही की देवकुलिका 11 वितानों के दृश्यांकन में नेमि एवं राजोभती को विवाह की बेदी के समक्ष खडा प्रदर्शित किया गया है जबकि जैन परम्परा से ज्ञात होता है कि नेमि विवाह स्थल पर गये ही नहीं अपितु मार्ग से ही दीक्षा के लिए लौट पड़े थे।[32] कुम्भारिया के शान्तिनाथ मंदिर के पांचवें वितान पर नेमि के जीवनदृश्यों का अंकन किया गया है, जो तीन आयतों में विभक्त है। बाहरी आयत में पूर्व और उत्तर की तरफ नेमिनाथ के पूर्वभव (महाराज शंख) का चित्रांकन है। महाराज शंख को पत्नी यशोमती, योद्धायों एवं सेवकों के साथ चित्रित किया गया हैं, पश्चिम दिशा की तरफ नेमि की माता शिवा शैय्या पर लेटी हुई प्रदर्शित है। उसके समीप 14 मांगलिक स्वप्न तथा नेमि के माता–पिता का वार्तालाप का दृश्यांकन है। राजा समुद्र विजय की विजयों का दृश्यांकन महत्वपूर्ण है। द्वितीय आयत में दक्षिण दिशा की ओर शिवा देवी नवजात के साथ लेटी हुई है। नैगमेषी द्वारा शिशु को जन्माभिषेक के लिए मेरू पर्वत पर ले जाने का दृश्य अंकित है। कलशधारी देवताओं और वज्रयुक्त इन्द्र की मूर्तियां चित्रित है। इन्द्र की गोद में एक शिशु विराजमान है। पश्चिम की ओर स्थासीन नेमि को बरात के साथ विवाह स्थल की ओर जाने का दृश्यांकन मिलता है। उसके आगे एक पिजड़े में बन्द शूकर, मेष और मृग जैसे पशुओ की आकृतियां चित्रित है। विवाहोत्सव में इन पशुओं के भावी बध को जानकर नेमिनाथ ने विवाह न करने का निश्चय कर दीक्षा लेने का संकल्प बद्ध चित्रण मिलता है। उसके समीप विवाह मण्डप और वेदिका के दोनों ओर राजोमती और नेमि की आकृतियां खड़ी हुई मिलती है। तृतीय आयत में दक्षिण दिशा की ओर नेमि का विवाह से लौटने का दृश्यांकन चित्रित है। उसके समीप नमस्कार मुद्रा में एक पुरूष की आकृति का दृश्यांकन है। सम्भवतः यह राजोमती के पिता की आकृति है जो नेमिनाथ से विवाह मण्डप पर वापस जाने की प्रार्थना कर रहे हैं। उसके समीप नृत्य एवं वाद्यवादन करती हुई 9 आकृतियां एवं नेमिनाथ द्वारा आभूषण परित्याग तथा केश लुंचन का दृश्य प्रदर्शित किया गया है दाहिनी ओर गिरिनार पर्वत और देवाताय बने हुए हैं। नेमि के समवसरण उत्कीर्णन में नेमि की ध्यानस्थ मूर्ति है। कुम्भारिया के महावीर मंदिर की पश्चिमी भ्रमिका के पांचवे वितान पर नेमि का जीवन–दृश्य अंकित है।[33] इसमें शंख के पिता श्रीषेण और शंख की मूर्तियां उत्कीर्ण की गयी है। दक्षिणी–पश्चिमी कोण पर विश्रामरत कई मूर्तियों का उत्कीर्णन हुआ हैं उसके नीचे 'अपराजित विमानदेव' लिखा हुआ है। अन्तिम आकृति के नीचे भाग में 'समुद्र विजय' उत्कीर्ण किया गया है। उसके आगे कृष्ण की आयुधशाला का चित्रांकन किया गया है जिसमें कृष्ण के शंख, चक्र, गदा और खडग जैसे आयुध प्रदर्शित किये गये हैं। उसके निकट नेमि कृष्ण का पांच जन्य शंख बजाते हुए प्रदर्शित है। उसका उल्लेख जैन ग्रन्थों में भी मिलता है जिसमें कृष्ण एवं नेमि के भुजा परिक्षण का वर्णन मिलता है। जिसके अनुसार नेमि ने कृष्ण की भुजा को झुका दिया था। प्रस्तुत विवरण वैष्णव धर्म पर जैन धर्म के उत्कर्ष का मानसिक विचारधारा का प्रयास प्रतिबिम्बित होता है। इसी समय आकाशवाणी हुई कि नेमि 22वें जिन है जो अविवाहित रहते हुए ब्रह्मचर्य की अवस्था में ही दीक्षा ग्रहण करेंगें।[34] आयुधशाला के समीप वसुदेव–देव की वार्तालाप की मुद्रा में मूर्तियाँ बनी हुई है। दक्षिण की ओर विवाह–मण्डप जिसके

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, June 2026 Impact Factor: 8.2

समीप राजोमती द्वारा एक सखी से वार्तालाप का दृश्यांकन है। आकृति के नीचे भाग में 'राजीमती और सखी' उत्कीर्ण है। विमलवसही की देवकुलिका 10 के नितान दृश्यों के मध्यभाग में कृष्ण तथा उनकी रानियों एवं नेमि को जलक्रीडा करते हुए प्रदर्शित किया गया है। जैन परम्परा में उल्लिखित है कि समुद्र विजय के अनुरोध पर कृष्ण नेमि का विवाह हेतु सहमत करने के उद्देश्य से जलक्रीडा के लिए ले गये थे।[35] दूसरे वृत्त में कृष्ण की आयुधशाला तथा कृष्ण एवं नेमि के शक्ति परीक्षण का दृश्यांकन किया गया है। उसके समीप नेमि द्वारा पांचजन्य शंख बजाने एवं धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाते हुए मूर्तियां उत्कीर्ण की गयी है। तीसरे वृत्त में नेमि के विवाह का दृश्यांकन किया गया है। जिसमें विवाह मण्डप, पिजड़ों में बन्द मृग, शूकर और सिंह जैसे पशु का चित्रांकन किया गया है। रथ में बैठकर नेमि द्वारा विवाह मण्डप की ओर जाते हुए तथा इसके विपरीत विवाह मण्डप से वापस जाते हुए दूसरे स्थ का चित्रण किया गया है। उसके आगे नेमि की ध्यानस्थ मुद्रा में एक मूर्ति निर्मित है जिसमें नेमि अपने केशों का लुंचन कर रहे है। उनके बाँयी ओर चार आकृतियां और दाहिनी ओर इन्द्र खड़े हुए प्रदर्शित किये गये हैं। अगले दृश्य में नेमि के कैवल्य प्राप्ति का चित्रण किया गया है। ध्यानस्थ मुद्रा में नेमि विराजमान है और दोनों ओर कलशधारी एवं मालाधारी आकृतियां निर्मित है।[36] लूणवसही की देवकुलिका 11 के वितान पर कृष्ण एवं जरासन्ध का युद्ध. नेमि का विवाह एवं दीक्षा का चित्रण किया गया है।[37] सम्पूर्ण चित्रण सात पंक्तियों में पंक्तिबद्ध है। चौथी पंक्ति में नेमिका रथ विवाह मण्डप की ओर जाता हुआ उत्कीर्ण किया गया है। उसके समीप पिंजरे में बन्द शूकर एवं मृग जैसे पशुओं और चित्रण किया गया है। विवाह मण्डप में एक ओर नेमि और दूसरी ओर राजीमती की मूर्ति का अंकन किया गया है। इसके समीप उग्रसेन का महल चित्रित है। पांचवी पंक्ति में बारात के वापस लौटने का दृश्य प्रदर्शित किया गया है। उसके आगे तपस्यारत नेमि का चित्रण है। लूणवसही की देवकुलिका 9 के वितान के दृश्यों की पहचान नेमि के साथ की गयी है।[38] कल्पसूत्र के दृश्यों में नेमि के शंख, लांछन का पूजन, नेमि का जन्म एवं जन्माभिषेक का चित्रण किया गया है। तत्पश्चात् नेमि एवं कृष्ण के शक्ति परीक्षण का चित्रण है। कृष्ण के समीप उनके आयुध–शंख, चक्र, गया एवं पद्म का चित्रांकन किया गया है। नेमि का समवरण और ध्यानमुद्रा में नेमि का चित्रण है।[39] विभिन्न क्षेत्रों में उत्कीर्ण मूर्तियों के अध्ययन से स्पष्ट है कि ऋषभनाथ, पार्श्व एवं महावीर के बाद नेमिनाथ ही उत्तर भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रभावशाली जिन थे।

संदर्भ

1. हस्तीमल, जैन धर्म का मौलिक इतिहास, पृ0 139–239
2. शंख लांछन उनके पूर्वभव के शंख नाम से सम्बन्धित हो सकता है, हरिवंश पुराण 34.35
3. हरिवंश पुराण, 35/35
4. हरिवंश पुराण, 41/36/37
5. डॉ0 वी0एस0 अग्रवाल, पृ0 16–17
6. श्रीवास्तव बी0एन0, समइन्टरेस्टिग जैन स्कल्पचर्स इन द स्टेट म्यूजियम लखनऊ, 1972, अंक–9, पृ0 50
7. राज्य संग्रहालय, लखनऊ, जे0 117, जे0 60
8. श्रीवास्तव बी0एन0, समइन्टरेस्टिग जैन स्कल्पचर्स इन द स्टेट म्यूजियम लखनऊ, 1972, अंक–9, पृ0 50–51
9. चन्द्रा आर०पी०, जैन रिमेन्स ऐट राजगिरि, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया ऐजुअल रिपोर्ट, 1925–26, पृ० 135–26

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, June 2026 Impact Factor: 8.2

10. ले०यू०पी० शाह, स्टडीज इन जैन आर्ट, पृ० 14
11. चन्दा आर०पी०, जैन रिमेन्स ऐट राजगिरि, पृ० 126
12. तिवारी, एम०एन०पी०, ए नोट ऑन दि आइडेन्टिफिकेशन आव ए तीर्थंकर इमेज ऐट भारत कला भवन, वाराणसी, जैन जर्नल, खण्ड 6. अंक 1, पृ0 41–43
13. तिवारी, एम0एन0पी0, वही खण्ड–6, अंक–1, पृ0 41–43
14. अमेरिकन इन्स्टिट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज, वाराणसी, चित्र संग्रह, 157.17
15. श्रीवास्तव बी०एस०, कैटलाग एण्ड गाईड टू गंगा गोल्डेन जुबिली म्यूजियम, बीकानेर, बम्बई, 1961
16. डॉ0 मारूति नन्दन प्रसाद तिवारी, जैन प्रतिमा विज्ञान, पृ0 119
17. डॉ0 मारूति नन्दन प्रसाद तिवारी, जैन प्रति का निबन्ध प्रतिमा, पृ0 119
18. डॉ० मारूति, नन्दन प्रसाद तिवारी, जैन प्रतिमा विज्ञान, पृ० 120
19. देवगढ़ के मंदिर संख्या 15
20. देवगढ़ के मंदिर 12 के प्रदक्षिणापथ, चहारदिवारी और मंदिर 26
21. देवगढ़ के मन्दिर 3,12; 13,15
22. तिवारी एम०एन०पी०, ऐन अन्पब्लिश्ड इमेज आव नेमिनाथ फ्राम देवगढ़, जैन जर्नल खण्ड 8, अंक 2, पृ० 84–85
23. देवगढ़ के मंदिर, 11,15,21,26,31
24. डॉ0 मारूति नन्दन प्रसाद तिवारी, जैन प्रतिमा विज्ञान, पृ0 120
25. डॉ० मारूति नन्दन प्रसाद तिवारी, जैन प्रतिमा विज्ञान, पृ० 121
26. चन्द्र प्रमोद, स्टोन स्कल्पचर इन दि इलाहाबाद म्यूजियम 1970
27. दीक्षित, एस०के०, ए गाइड टू दि स्टेट म्यूजियम, धुबेला (नवगांव) विध्य प्रदेश, नवगांव, 1959, पृ० 12
28. जैन बालचन्द्र, 'धुबेला संग्रहालय के जैनमूर्ति लेख', अनेकान्त, वर्ष, 19, अंक–4, पृ० 244
29. कीलहार्न, एफ०, आन ए जैन स्टैचू इन दि हार्निमन म्यूजियम, जर्नल आव दि रायल एशियाटिक सोसाइटी, लंदन 1898, पृ0 101–2
30. प्रसाद, एच०के०, जैन ब्रोन्जेज इन दि पटना, पृ० 275–89
31. मित्रा, देवला, सम जैन ऐन्टिक्विटीज फ्राम बाकुड़ा, वेस्ट बंगाल, पृ0 129, 132, कुरेशी मुहम्मद हमीद, लिस्ट ऑव ऐन्शण्ट मान्युमेन्टस इन द प्राविज्म आव बिहार एण्ड उड़ीसा, आर्कियॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, न्यू इम्पीरियल सिरीज, कलकत्ता।
32. त्रिषष्टिशलाका पुरूष चरित हेमचन्द्रकृत, खण्ड–5, गायकवाड़ ओरियन्टल सिरीज, बडौदा, 1962, पृ० 258–60
33. डॉ0 मारूति नन्दन प्रसाद तिवारी– जैन प्रतिमा विज्ञान, पृ0 121
34. त्रिषष्टिशलाका पुरूष चरित हेमचन्द्रकृत, गायकवाड़ ओरियन्टल सिरीज, बड़ौदा, 1962, पृ० 248–50
35. वही, पृ० 250–55
36. जयन्त विजय, मुनिश्री, होली आबू (अनुवाद, यू0पी0 शाह) भावनगर, 1954
37. वही, पृ० 122

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, June 2026
Impact Factor: 8.2

38. वही, पृ० 121

39. ब्राउन, डब्लू एन०, ए डेस्क्रिप्टिव एण्ड इलेस्ट्रेटेड टेड कैटलाग आव मिनियेचर पेन्टिग ऑफ दि जैन कल्पसूत्र वांशिगटन 1934, पृ० 45–49, फलक, 30–34, चित्र 101–14